

## माखन दही लुटावै (७४)

मैया मोहन घर आये मेरो माखन दही लुटावै ।

छिप छिप कर तेरो बिहारी लिए लड़िकों की सेना है सारी  
आय आय के ऊधम मचाए, मेरो माखन....

आय छींके से मटकी उतारे थोड़ा खाए और बहुत बिगाड़े  
कोई बरजे तो आंखे दिखाए, मेरो माखन....

कभी माला गले की आ तोड़े कभी भांजन घर के आ फोड़े  
कभी चोली में गेंद बतावे, मेरो माखन....

कभी घनघट पै रारि मचावे कभी गागर सिर से गिरावे  
कभी गारी दे तारी बजावे, मेरो माखन....

इक रोज़ में पलना पै सोई तेरे लाला ने लाज विगोई  
खाट पाट से चोटी बंधावे, मेरो माखन....

अब बरजो अपना कन्हाई नित हानि सही ना जाई  
ना तो गावं को छोड़ के जावें, मेरो माखन....

मैया सुन सुन कर मुस्काई मेरा छोटे सो बालु कन्हाई  
क्यों झूठा तू दोष लगावे, मेरो माखन....

कर जोड़ूं मैं गारी न दीजो जितना खाया है दस गुना लीजो  
वह तो साई के सत्संग में जाए, तेरो माखन कैसे चुरावे ॥